www.tantrik-astrologer.in

खण्ड – २

श्लोक सं.	विषय	पृष्ठ
१.	अनुबन्ध चतुष्टय एवं अधिकारी निरूपण	२
२.	मोक्ष का साधन	३
३.	अज्ञान का विरोधी – ज्ञान	४
४.	आत्मा स्वयंप्रकाश स्वरूप	५
५.	ज्ञान से ही जीव की समाप्ति	६
६.	संसार स्वप्नवत्	७–८
७.	अधिष्ठान के ज्ञान से भ्रमनिवृत्ति	८–९
८.	परमात्मा – जगदाधार एवं उपादान कारण	९–१०
९.	सच्चिदानन्द परमात्मा की सर्वव्यापकता	१०
१०.	उपाधि में सत्यबुद्धि से एक में अनेकता का भ्रम	११
११.	उपाधिवशात् ही आत्मा में जाति आदि का आरोपण	१२

खण्ड - ३

श्लोक सं.	विषय	पृष्ठ सं.
१२.	स्थूल शरीर का वर्णन	२
१३.	सूक्ष्म शरीर का वर्णन	३
१४.	कारण शरीर का वर्णन	४
१५.	शुद्ध आत्मा पर पंचकोशों का आरोपण	५
१६.	आत्मा और पंचकोश विवेक	६
१७.	शुद्ध अन्तःकरण से ही आत्मा का साक्षात्कार	७
१८.	आत्मा की साक्षी स्वरूपता	८
१९.	अध्यास निरूपण	९
२०.	आत्मा की सन्निधि से उपाधि में चेतनता का आभास	१०
२१.	अविवेक से ही आत्मा में देहादि का अध्यास	११
२२.	अज्ञानवशात् आत्मा में जीवभाव की कल्पना	१२

खण्ड - ४

श्लोक सं.	विषय	पृष्ठ सं.
२३.	आत्मतत्त्व रागादि से रहित	२
२४.	आत्मा की सच्चिदानन्द स्वरूपता	३
२५.	आत्मा और बुद्धि के संयोग से ज्ञातादि पना	४
२६.	अविकारी आत्मा में जीव कल्पना	५
२७.	जीव के मिथ्यात्व निश्चय से आत्मा का साक्षात्कार	६
२८.	आत्मा की स्वयंप्रकाशरूपता	७
२९.	आत्मा की स्वयंप्रकाशरूपता	८
३०.	आत्मा के ज्ञान के लिए निषेध लक्षणा का प्रयोग	९
३१.	आत्मा पर से अनात्मा का निषेध	१०
३२.	आत्मा पर से अनात्मा का निषेध	११
३३.	आत्मा पर से अनात्मा का निषेध	१२

www.tantrik-astrologer.in

खण्ड – ५

श्लोक सं.	विषय	पृष्ठ सं.
३४.	आत्मा के लक्षण	२
३५.	आत्मा के लक्षण	३
३६.	आत्मा के लक्षण	४
३७.	निदिध्यासन का स्वरूप	५
३८.	निदिध्यासन का स्वरूप	६
३९.	निदिध्यासन के लिए लय-चिन्तन प्रक्रिया	७
४०.	जगत के बाधित होने पर स्वस्वरूपता में स्थिति	८
४१.	आत्मा में त्रिपुटी का अभाव	८
४२.	मंथन की प्रक्रिया	९
४३.	आत्मा पर से अनात्मा का निषेध	१०
४४.	आत्म-साक्षात्कार अर्थात् प्राप्त की ही प्राप्ति	११

खण्ड – ६

श्लोक सं.	विषय	पृष्ठ
४५.	अज्ञानवशात् जीवभाव में सत्यताबुद्धि	२
४६.	संसार की निवृत्ति का स्वरूप	३
४७.	ज्ञान का लक्षण	४
४८.	ज्ञान का लक्षण	५
४९.	निदिध्यासन का स्वरूप	६
५०.	अध्यात्मयात्रा – एक तीर्थयात्रा	७
५१.	जीवन्मुक्त का लक्षण	८
५२.	जीवन्मुक्त का लक्षण	९
५३.	विदेहमुक्ति के लक्षण	१०
५४.	ब्रह्मज्ञान की स्तुति	११
५५.	ब्रह्मज्ञान की स्तुति	१२

खण्ड – ७

श्लोक सं.	विषय	पृष्ठ
५६.	ब्रह्म का स्वरूप	२
५७.	ज्ञान के लिए निषेध लक्षणा प्रयोग	३
५८.	ब्रह्म की आनन्द स्वरूपता	४

www.tantrik-astrologer.in

५६.	ज्ञान का लक्षण	५
६०.	ब्रह्म की सर्वव्यापकता	६
६१.	ब्रह्म की स्वयंप्रकाशरूपता	७
६२.	ब्रह्म की सर्वव्यापकता का स्वरूप	८
६३.	ब्रह्म में जगत् का आरोपण	९
६४.	तत्त्व के ज्ञान से ही ब्रह्म की सर्वरूपता का भान	१०
६५.	ज्ञानचक्षु के द्वारा ही ब्रह्मदर्शन	११
६६.६८.	ग्रंथ का उपसंहार	१२

www.tantrik-astrologer.in